Economics

Agriculture Economics Group - B D·III Hons (I)

Lecture - 20

Dr. Vinod Baitha.
Dept of Economics.
Marwari college
Darbhanga.

भारतीय वन सम्पदा

किसी भी अर्थव्यवस्था की प्रगति में देश के वनों एवं वन क्षेत्रों का व्यापक महत्वपूर्ण योगदान होता है। वन प्रत्यक्ष रूप से उद्योगों के विकास में तथा परोक्ष रूप से कृषि की प्रगति में सहायक होते हैं। हमारे भारत के प्राकृतिक संसाधनों में वनों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय वन सम्पदा हमारी भारतीय सभ्यता और प्राचीन संस्कृति की अमूल्य धरोहर भी है। जहाँ तक वृक्षों के छाल, फल-फूल पत्ते और जड़ ही नहीं बल्कि अनेक प्रकार की जड़ी बुटियाँ भी वनों से प्राप्त होती है आज देश की लगभग 16% भूमि ही वनाच्छा वनाच्छादित है। जबकि पर्यावरण संतुलन के लिए कम से कम 33% प्रतिशत भूमि में वन होना आवश्यक है, किसी भी देश की वन सम्पदा वातावरण में उपलब्ध धूल कण, धुंआ, सीसा - कार्बनडाई आक्सासाइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, नाईट्रोजन आक्साईड सल्फरडाई आक्साईड एवं मानव जीवन को दूषित करने वाली गैस को घटाकर जीवन को सुरक्षा प्रदान करते हैं। वन सम्पदा भूमि को अपने जड़ों द्वारा जकड़कर हवा और वर्षा की तेज धार से मिट्टी की कटाव की सुरक्षा प्रदान करती है वनों की पत्तियाँ टहनियाँ और फल-फूल धरती पर झड़कर सड़ते हैं जिससे धरती अधिक उपजाऊ बनती है। भारतीय कृषि की अधिकांश सफलता वर्षा मौसम पर निर्भर करती है वर्षा वनों पर निर्भर करती है। इस लिए भारतीय कृषि वन सम्पदा पर पूर्णतया निर्भर है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए इसका महत्व और भी बढ़ जाता है वनों से प्राप्त होने वाले लाभों को दो भागों में बाँटा जाता है

1 प्रत्यक्ष लाभ — वनों से प्रत्यक्ष लाभ के रूप में अनेक प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त होती है जिससे देश के अनेक कारखाने चलते हैं; यह लाभ इस प्रकार से निम्नलिखित है;

(1) प्राथमिक उपज की प्राप्ति — भारतीय वनो से करीब 400 प्रकार की ऐसी लकड़ियाँ मिलती है जो मकान एवं फर्नीचर, रेल की पटरियाँ, नाव गाड़ी, कृषि औजार आदि बनाने के काम में आती है तथा जलावन के लिए उद्योगों के लिए कच्चे माल एवं घरेलु जलावन के रूप में लायी जाती है इन्हे हम वनों की प्राथमिक उपज कह सकते हैं। वनों की बहुमूल्य लकड़ियों में, रोजउड, साल, सागौन, देवदार, महगनी शीसम आदि प्रसिद्ध है भारत की वनो की लकड़ियो विदेशो में भी निर्यात की जाती है।

(2) जड़ी-बूटी — वनो से अनेक प्रकार की जड़ी-बुटियाँ प्राप्त होती हैं जिससे कुनेन और अन्य औषधियाँ बनती है औषधियाँ वनो की देन है शुद्ध शहद भी वनों से ही प्राप्त होता है।

(3) रस — वनों से हमे अनेक प्रकार रस प्राप्त होते हैं जिसे वस्तुएं बनायी जाती है वनों से रबर, तारपीन का तेल, विरोजा, लाख और गोंद प्राप्त होती है

(4) घास — वनों से हमे घास प्रजाती के अनेक घासें प्राप्त होती है जिसमे बॉस, सवाई, भाभर आदि घासे प्राप्त होती है जिससे कागज या गत्ता बनाया जाता है जो हमारे दैनिक कार्यो के लिए आवश्यक है

(5) जंगली पशु — वनो से विभिन्न प्रकार के जंगली जानवर, जैसे चीता, शेर, हाथी भेड़िया, लोमड़ी, हिरण आदि पाए जाते है इन जानवरो के द्वारा हमे, मांस हड्डी, दॉत, चमड़ा — सयूर पर आदि प्राप्त होते हैं जिसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के औषधी एवं अन्य कार्यो में किया जाता है

(6) चारगाह का स्थान — वन पशुओ को चरने के लिए उचित स्थान एवं चारा देते है हमारे देश में लगभग 237 लाख पशु हमारे देश के वनों से चारा पाते है और जीवित रहते है पशुओ के लिए वन जीवन दायनी का कार्य करते है।

(7) पर्याप्त खाद — वनो में बड़ी मात्रा में पत्तियॉ गीरी रहती है और वर्षा होने पर सड़ने लगती है जिसे खाद बन जाता है पत्तियों और सुखी घास के सड़ने से पर्याप्त मात्रा में खाद की प्राप्ति होती है जो भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि करती है जलाने के लिए लकड़ी मिलती है

(8) आकर्षक पर्यटन — भारतीय वन घने और सुरम्य वनों से भरपुर है, इन वनों में भ्रमण — भ्रमण करना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। स्वास्थ्यवर्द्धक एवं धार्मिक शान्ति हेतु बड़ी मात्रा मे पर्यटक आते हैं

इससे आकर्षक पर्यटन केन्द्रों एवं धार्मिक स्थलों का अधिक विकास हुआ है जैसे जम्मू कश्मीर के श्रीनगर, गुलमर्ग तथा पहलगाम, शिमला नैनिताल, मसूरी, दार्जिलिंग आदि, इसी प्रकार, अमरनाथ, बदरीनाथ केदारनाथ, हरिद्वार, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि आदि इस प्रकार पर्यटन उद्योग का विकास हुआ है जो भारतीय वनों के आस पास है और उनकी सुन्दरता बढ़ा रहे है

(9.) विदेशी मुद्रा अर्जन — भारतीय वनों से प्राप्त कई उत्पादन, उत्पाद विदेशों को निर्यात किए जाते है इससे भारत को विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है भारत में वनों के कारण प्रतिवर्ष लाखों डालर की प्राप्ति होती है।

(10) रोजगार की प्राप्ति — भारतीय वनों से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हजारों लाखों लोगों को रोजगार की प्राप्ति होती है वनों ने भारत के अनेक लोगों रोजगार दिया है बढ़ई, लकड़हारे, अन्य प्रकार के उद्योग में लगे हुए व्यक्ति वन की कृपा से ही रोजगार प्राप्त करते है आज अगर उनके कारखाने को माल मिलना बंद हो जाय तो अधिकांश व्यक्ति बेरोजगार हो जाएंगे।

(11) वनों पर आधारित उद्योग :— वनों पर अनेक उद्योग आधारित है

i. कागज उद्योग — वनो से हरी घास की प्राप्ति होती है जो कागज बनाने के काम में आती है भावर, सवाई, बॉस, मुलायम लकड़ी से लुगदी बनाया जाता है और लुगदी से कागज बनाया जाता है जो हमारे लिए आवश्यक है

ii. दियासलाई उद्योग :- दियासलाई मुलायम लकड़ी से बनायी जाती है यह लकड़ी हिमालय और पश्चिमी घाट में पायी जाती है चीड़ सेमल आदि से दियासलाई बनायी जाती है

iii. लाख उद्योग :— यह एक प्रकार का गोंद है जो एक कीड़े के द्वारा इकट्ठा किया जाता है यह असम और छोटानागपुर के जंगल में बहुत पाया जाता है। इस उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर में है बिहार राज्य में 530 फैक्ट्रीयाँ है जो शुद्ध लाख के निर्यात के भारत में प्रथम स्थान है।

iv. रेशम का उद्योग :— रेशम एक कीड़े द्वारा पैदा किया जाता है कीड़े को गर्म पानी में डालने से कीड़ा मर जाता है कीड़े से धागा निकालकर रेशों से कपड़े बनाए जाते है सम्पूर्ण भारत में लगभग 3 लाख पौंड कच्ची रेशम उत्पन्न किया जाता है। भारत में मैसूर, छोटानागपुर, कोयम्बटूर, कॉगड़ा, मध्य प्रदेश तथा कश्मीर में रेशम का उत्पादन होता है,

v. रबर उद्योग — रबर एक प्रकार के वृक्ष के रस से तैयार किया जाता है देश में रबर उत्पादन का क्षेत्र दक्षिणी भारत में केरल तमिलनाडु, मैसूर आदि मुख्य क्षेत्र है। इससे मोटर, या मोटर साईकिल

के राम्प, हलुवा, गद्दे, तकिये, वाटर प्रूफ कपड़ा, बिजली आदि का सामान तैयार किया जाता है।

VI कत्था और कच का धंधा — खैर वृक्ष से कत्था और कच तैयार किया जाता है। कत्था खाने के काम में आता है और कच से रंग बनाया जाता है। इसके उत्पादन क्षेत्रों में मध्य प्रदेश, दक्षिणी भारत और हिमालय का तराई क्षेत्र है।

VII चमड़ा बनाने के पदार्थ — हमारे देश में बहुत से ऐसे वृक्ष पाए जाते हैं, जिनकी छाल या फल से चमड़ा बनाने का काम किया जाता है। ये वृक्ष बबूल, सुखद, आवल, हर्रे के पत्ते होते हैं। बबूल सूखे प्रदेशों में जैसे राजस्थान, सुखद दक्षिणी पश्चिमी भाग और आवल जोधपुर में प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है। उत्तर प्रदेश में चमड़े के कारखाने कानपुर, लखनऊ, आगरा, मेरठ में हैं।

VIII गोंद की राल — यह एक वृक्ष के रस से तैयार होता है। यह वृक्ष अधिकतर बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश और असम में पाए जाते हैं। पेड़ के रस को रेजीन कहते हैं, जिससे तारपीन का तेल कहते हैं और शेष बची हुई वस्तु को गोंद कहते हैं।

IX अन्य उद्योग — उपर्युक्त उद्योगों के अतिरिक्त देश में कई अन्य उद्योग जैसे लकड़ी चीरने के कारखाने, प्लाईवुड के कारखाने, पेंसिल के कारखाने, चंदन के तेल का उद्योग, खिलौने बनाने, खेल का सामान बनाने, फरनीचर बनाने, नारियल संबंधी वस्तुएँ बनाने आदि उद्योग वनों पर आधारित हैं।

— वनों के प्रत्यक्ष लाभ :—

वनों से निम्नलिखित प्रत्यक्ष लाभ हैं।

1. वर्षा कराने में सहायक — जहाँ अधिक घने वन होते हैं वहाँ वर्षा भी अधिक मात्रा में होती है क्योंकि वन पानी के बादल को अपनी ओर खींचते हैं और पानी बरसाने में सहायक होते हैं।

2. वन बाढ़ रोकने में सहायक होते हैं — वन नदियों में बाढ़ नहीं आने देते हैं। ये वर्षा के दिन में पानी को अपनी जड़ों में सोख लेते हैं। जिससे अधिक पानी नदी में नहीं आ पाता है। वन नदियों के वेग को कम कर देते हैं जिससे बाढ़ की सम्भावना कम हो जाती है।

3. वन मिट्टी के कटाव को रोकते हैं — वृक्षों से भूमि का कटाव नहीं हो पाता है। वृक्ष पानी के वेग को रोककर पानी को अपने अंदर सोख लेते हैं जिससे भूमि की ऊपर की उपजाऊ मिट्टी भूमि पर से जाने नहीं पाती और भूमि का उपजाऊपन स्थिर रहता है।

4 वन जलवायु को नम बनाते हैं। — जहाँ घने वन होते हैं वहाँ की जलवायु शीतल तथा सुहावनी होती है। पेड़ जलवायु को नम बनाते हैं क्योंकि वृक्ष की पत्तियाँ नीचे से पानी लेती हैं और हवा में नमी लाती हैं। इसका प्रभाव यह होता है कि तापक्रम में कमी आ जाती है।

5. सुरक्षा में सहायक — वन न केवल देश की सुरक्षा पंक्ति के रूप में कार्य करते हैं वरन वनों में सेना को रखकर दुश्मनों के निरीक्षण से बचाया जा सकता है। वनों से प्राप्त लकड़ियाँ सेना के वाहन, जलयान तथा

सौन्दर्य सामग्री बनाने के काम में आती है।

6. सभ्यता एवं संस्कृति का विकास —— जहाँ हिमालय के वनों में भारतीय सभ्यता पनपी और वृन्दावन के कुंज-गलिन में राधाकृष्ण की लीलाएँ हुईं वहाँ वनों के विनाश में बेबिलोन, सिरिया, मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा जैसे सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ नष्ट हो गयी स्पष्ट है कि वन सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का आधार है।

7. प्राकृतिक दशाओं में परिवर्तन —— वन किसी क्षेत्र अथवा स्थान की प्राकृतिक दशाओं में आमूल-चूल परिवर्तन कर देते हैं जहाँ एक और वनों से जलवायु सम, वर्षा अधिक एवं तापमान अधिक हो जाता है वहीं दूसरी ओर वन क्षेत्र को रम्य आकर्षक एवं स्वास्थ्यवर्धक बना देते हैं वन पहाड़ों से चट्टानों को खिसकने से रोक कर उनकी सुन्दरता बनाएँ रखते हैं। रेगिस्तान के प्रसार को रोक कर मैदानी भागों को शुष्क एवं रेतिला होने से बचाते हैं। भूमि कटाव को रोक कर भू संरक्षण में मदद करते हैं।

8. वन देश को तेज हवा एवं विदेशी आक्रमण से बचाते हैं। — वन देश की रक्षा तेज हवाओं से करते हैं क्योंकि वृक्ष उनकी वेग को रोक देते हैं जिससे खेतों में खड़ी फसल नष्ट होने से बच जाते हैं बड़े और घने वन देश को विदेशी आक्रमण से बचाते हैं क्योंकि वन में सुगमता से गुजर नहीं हो सकती।

9. वन देश की सुन्दरता में वृद्धि करते हैं - वन देश का सौन्दर्य बढ़ाते हैं जिनकी सुन्दरता देखने दूर-दूर से लोग आते हैं कश्मीर में ऊँचे-ऊँचे पेड़ बहते हुए नाले मार्ग की शोभा बढ़ाते हैं इन वनों से हमें आनंद प्राप्त होता है। इससे हमें विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होती है क्योंकि काफी विदेशी पर्यटक इन सौन्दर्यशाली मार्ग को देखने आते हैं।

10. वन पानी के तल को ऊँचा रखने में सहायक होते हैं - वृक्ष अपनी जड़ों को वर्षा का पानी सोखकर पानी के धरातल को ऊँचा कर देता है और कुँये खोदने में आसानी होती है

11. वन रेगिस्तान के प्रसार को रोकते हैं — रेगिस्तान शुष्क प्रदेश होते हैं जहाँ नमी नहीं होती है इसलिए यदि रेगिस्तान के समीप वृक्षारोपण किया जाय तो रेगिस्तान का प्रसार बंद हो जाएगा। क्योंकि पेड़ की जड़े पानी को सोखकर धरातल को ऊँचा करेगी वृक्षों से पानी बरसने लगेगा। हवा में नमी आ जाएगी। और रेगिस्तान की भीषणता कम हो जाएगी। इसलिए रेगिस्तान में वृक्षारोपण आवश्यक है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वन से कृषि के प्रायः सभी क्षेत्रों में लाभ प्राप्त होते हैं इस लिए कहा जाता है कि वन भारतीय कृषि के सहचर हैं ——